www.ccsuniversity.ac.in

प्रायोगिक समाचार पत्र

परिसर

चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ

मेरठ, फरवरी, 2022- विशेषांक
अंक : 01

सीसीएसयू के ई-कंटेंट से पढ़ रहे प्रदेश भर के छात्र 2

कैंपस में खुलेगा मानव संसाधन विकास केंद्र 3

छात्रों ने सीखे फिल्म निर्माण के गुर 4

लक्ष्य: विश्वविद्यालय को ए++ ग्रेड, छात्रों को रोजगार

कुलपति प्रो0 संगीता शुक्ला ने पत्रकार वार्ता में खींचा भविष्य का खाका

विश्वविद्यालय परिसर में प्रेस कॉन्फ्रेंस में पत्रकारों से वार्ता करतीं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला। साथ में हैं प्रति कुलपति प्रोफेसर वाई विमला, कुलसचिव धीरेंद्र वर्मा और प्रोफेसर प्रशांत कुमार।

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने अपने लिये ए-ग्रेड पाने का लक्ष्य तय किया है। इसके लिए विश्वविद्यालय बेहद गंभीरता से कोशिश में जुट गया है। आने वाले समय में विश्वविद्यालय में कई तरह के बदलाव दिखेंगे, जहां शोध और नवाचार पर जोर होगा। छात्र रोजगार पाने के साथ दूसरे को भी रोजगार देने लायक बनेंगे। इसके लिए कई नए कोर्स भी शुरू किए जा रहे हैं। यह कहना है विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला का। कुलपति विश्वविद्यालय में अपना एक माह पूरा होने पर सोमवार 24 जनवरी को पत्रकारों से वार्ता कर रही थीं। उन्होंने पिछले माह ही विश्वविद्यालय का कार्यभार संभाला है।प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने मीडिया को बताया कि उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को प्रभावी तरीके से लागू करने के लिए छह समितियों का गठन किया है। इसमें रिसर्च एंड इनोवेशन, आइटी, एन्वायरमेंटल, मोरल एंड इथिक्स, इन्क्यूबेशन सेंटर और सेंटर फार वोकेशनल एजुकेशन एंड स्किल डेवलपमेंट प्रमुख है। उन्होंने कहा कि अच्छे रिसर्च करने वाले शोधार्थियों की फेलोशिप बढ़ाई जाएगी। जो शिक्षक अच्छे प्रोजेक्ट लाएंगे, उन्हें फंड भी उपलब्ध कराया जाएगा।

उन्होंने बताया कि मेरठ और गाजियाबाद के प्रमुख उद्योगों से एकेडमिक करार किया जा रहा है। इससे उद्योगों की मांग के अनुसार छात्रों को रोजगार लायक बनाया जाएगा। साथ ही छात्रों की उद्यमशीलता पर भी जोर दिया जा रहा है। इससे छात्र अपना स्टार्टअप शुरू करके दूसरों को रोजगार देने लायक बन सकेंगे। कामन फैसिलिटी सेंटर के लिए दो करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। विशेषज्ञों की टीम छात्रों से आइडिया लेगी। यह सेंटर कालेजों के लिए भी खुला रहेगा। उन्होंने कहा कि नैक और एनआइआरएफ की रैंकिग के लिए भी विश्वविद्यालय की तैयारी है।

हर पेड़ की होगी बार कोडिंग

पर्यावरण के प्रति जागरूकता के लिए कुलपति ने एक नई पहल भी शुरू की है। उन्होंने बताया कि परिसर में जितने भी पेड़ हैं, उनकी बार कोडिग कराई जा रही है। इससे छात्र स्कैन करके संबंधित पेड़ के वानस्पतिक नाम जान सकेंगे। आगे चलकर मेरठ के अलग-अलग क्षेत्रों में औषधीय पौधों की भी कोडिग कराई जाएगी।

डिग्री मार्कशीट के झंझट को करेंगे दूर

कुलपति ने बताया कि छात्रों की सुविधा के लिए हर प्रयास हो रहे हैं। डिग्री-मार्कशीट समय से मिले, इसकी व्यवस्था की जाएगी। डिजिलॉकर में अधिक से अधिक सर्टिफिकेट अपलोड कराने का प्रयास किया जा रहा है। छात्रों को बिचौलियों से भी बचाने का प्रयास होगा।

पीएचडी प्रवेश परीक्षा के लिए प्रयास

कुलपति ने एक सवाल के जवाब में कहा कि अभी ए-ग्रेड के विश्वविद्यालय ही पीएचडी की प्रवेश परीक्षा करा सकते हैं। इससे स्थानीय स्तर पर छात्रों को मौका नहीं मिल पा रहा है। विश्वविद्यालय की ओर से इसके लिए प्रयास किया जाएगा।

त्रैमासिक पत्रिका भी निकालेगा विश्वविद्यालय

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने पहली बार त्रैमासिक पत्रिका भी निकालने का निर्णय किया है। इसके लिए कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर विकास शर्मा को समन्वयक बनाया है। पत्रिका में शैक्षणिक गतिविधियों के विषय में छात्रों को बताया जाएगा।

प्रेस वार्ता में प्रति कुलपति प्रोफेसर वाई विमला और कुलसचिव धीरेंद्र वर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने वार्ता का संचालन किया। इस दौरान डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, मितेंद्र कुमार गुप्ता आदि भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह विवि का आईआईटी रुड़की से हुआ करार

विज्ञान के साथ इंजीनियरिग के छात्रों को मिलेगा इसका लाभ

- आईटी ट्रेनिंग, कौशल विकास और स्टार्ट अप के लिए अहम होगा

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने शुक्रवार 7 जनवरी को आइआइटी रुड़की से करार किया। विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान विभाग से इलेक्ट्रानिक्स व आईसीटी एकेडमी के साथ यह पहला एमओयू (मैमोरेंडम ऑफ अंडरस्टेंडिंग) साइन हुआ है।

कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि आईटी ट्रेनिग, कौशल विकास और स्टार्ट-अप के लिए यह महत्वपूर्ण एमओयू होगा। विज्ञान के साथ इंजीनियरिग के छात्रों को इसका लाभ मिलेगा। शिक्षकों को भी तकनीकी के क्षेत्र में नए-नए कोर्स की ट्रेनिग की सुविधा मिलेगी। नई शिक्षा नीति के तहत कौशल विकास के लिए यह करार उपयोगी है।

इस अवसर पर मौजूद आइआइटी रुड़की के प्रोफेसर प्रो. संजीव मन्हास ने बताया कि एमओयू से भारत सरकार की डिजिटलाइजेशन को भी महत्वपूर्ण मिलेगा। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, डाटा साइंस और क्लीन ऊर्जा जैसे विषयों पर शोध अनुसंधान और ट्रेनिग करने का अवसर मिलेगा। इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो. वाई विमला, भौतिक विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो. वीरपाल सिंह, कुलसचिव धीरेंद्र वर्मा, विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो. मृदुल गुप्ता, प्रो. अनिल मलिक, प्रो. संजीव, प्रो. अनुज कुमार आदि उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

सुस्ती का अर्थ

अर्थव्यवस्था को कोविड-पूर्व की स्थिति में लौटाने के तमाम प्रयासों के बावजूद इस क्षेत्र में अपेक्षित गति नहीं आ पा रही है। पिछली तिमाही में औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि को देखते हुए उत्साह जगा था कि जल्दी ही अर्थव्यवस्था पटरी पर लौट आएगी। सरकार ने भी अनुमान लगाया था कि इस वित्त वर्ष में आर्थिक विकास दर नौ फीसद के आसपास रह सकती है। मगर इस अनुमान तक पहुंचना अभी संभव नहीं लग रहा। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय की ताजा रिपोर्ट में औद्योगिक क्षेत्र की गति धीमी ही दर्ज हुई है। खनन के क्षेत्र में जरूर कुछ उत्साहजनक नतीजे देखने को मिले हैं, मगर बाकी क्षेत्रों में सुस्ती जारी है। इन सबके बीच महंगाई पर अंकुश लगाना कठिन बना हुआ है। खुदरा महंगाई साढ़े पांच फीसद से अधिक हो गई है। जबकि कोविड के दौरान यह पांच फीसद से नीचे थी। तब वस्तुओं की पहुंच सुगम नहीं रह गई थी। औद्योगिक उत्पादन में सुस्ती और महंगाई में निरंतर बढ़ोतरी दो ऐसे बिंदु हैं, जो आर्थिक विकास दर के पांव में पत्थर का काम करते हैं। खुद रिजर्व बैंक ने अनुमान जताया है कि अभी महंगाई की दर और बढ़ेगी तथा इस वित्त वर्ष के अंत तक अपने शीर्ष पर रहेगी, फिर उसमें उतार शुरू होगा। हालांकि महंगाई के कारणों में पेट्रोल-डीजल की कीमतें बढ़ने को भी एक प्रमुख कारण माना जाता है, मगर पिछले कुछ समय से सरकारों ने इसे काबू में कर रखा है। फिर खाद्य पदार्थों की कीमतों में बढ़ोतरी इसलिए भी लोगों की समझ से परे है कि इस मौसम में फलों, सब्जियों, दुग्ध उत्पाद और कई नई फसलों की बाजार में आवक कुछ अधिक रहती है। फिर भी अगर वस्तुओं की कीमतें उतार पर नजर नहीं आ रहीं, तो इसमें केवल पेट्रोल-डीजल की बढ़ती कीमतों का दोष नहीं माना जा सकता।

कई जगहों से ऐसी भी शिकायतें सुनने को मिल रही हैं कि फसल न बिक पाने की वजह से किसान सब्जियों को सड़कों पर फेंकने को मजबूर हैं। दरअसल, महंगाई पर काबू न पाए जा सकने के पीछे एक बड़ा कारण कृषि उत्पाद का माकूल भंडारण और बाजार तक उनकी पहुंच सुनिश्चित न हो पाना है। फिर किसानों से खरीद और बाजार तक फसलों की पहुंच बनाने में कीमतों का बड़ा अंतर बिचौलियों की मनमानी की वजह से पैदा होता है। उसे नियंत्रित और व्यावहारिक बनाने के लिए कोई कारगर उपाय नहीं किया जाता। इससे मध्य और निम्न आयवर्ग पर महंगाई की मार पड़ती है। औद्योगिक उत्पादन को अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है, मगर उसकी सुस्ती नहीं टूट पा रही, तो यह निस्संदेह सरकार के लिए चिंता का विषय है। कोविड के दौरान कल-कारखाने बंद रखने पड़े थे, इसलिए उस वक्त औद्योगिक उत्पादन में गिरावट समझी जा सकती है, मगर जब से बाजार खुल गए हैं और कारोबारी गतिविधियां सुचारु हो चली हैं, औद्योगिक उत्पादन में तेजी की उम्मीद की जा रही थी।

सीसीएसयू के ई-कंटेंट से पढ़ रहे प्रदेशभर के छात्र

परिसर संवाददाता

मेरठ। प्रदेश स्तर पर तैयार यूपी डिजिटल लाइब्रेरी पर सीसीएसयू के शिक्षकों के ई कंटेट अपलोड किए जा रहे हैं। ई कंटेट को सीसीएसयू से संबद्ध कालेजों के ही नहीं, बल्कि प्रदेश भर के छात्र-छात्राएं पढ़ रहे हैं।कोरोना संक्रमण की वजह से उच्च शिक्षा की पढ़ाई अभी आनलाइन चल रही है। दो साल से भौतिक कक्षाओं से अधिक छात्र-छात्राएं ई कंटेंट से पढ़ाई कर रहे हैं। इसके लिए प्रदेश स्तर पर यूपी डिजिटल लाइब्रेरी तैयार की गई थी, जिसमें प्रदेश भर के शिक्षकों के ई कंटेंट अपलोड किए जा रहे हैं। इसमें चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय (सीसीएसयू) से जो ई कंटेंट तैयार किए गए हैं। अभी प्रदेश के 7104 कालेजों के 5650 शिक्षकों ने 26 विषय में 76712 ई कंटेंट तैयार किया है। इसमें सीसीएसयू से जुड़े 766 कालेजों के 466 शिक्षकों ने 39 विषयों में 4717 ई कंटेंट तैयार किया है। यह कंटेंट सीसीएसयू और उससे जुड़े कालेजों के छात्र-छात्राओं के साथ प्रदेश के अन्य विश्वविद्यालयों के छात्र भी पढ़ रहे हैं।

आइटी के सबसे अधिक कंटेंट

विवि की ओर से जिन विषयों का ई कंटेंट अपलोड किया है, उसमें इंजीनियरिग और टेक्नोलाजी में सबसे अधिक 1309 कंटेंट हैं। संस्कृत, जंतु विज्ञान, कामर्स में 300 से अधिक कंटेंट हैं।कृषि, राजनीतिशास्त्र, शिक्षा, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गृह विज्ञान, अर्थशास्त्र, हिदी, मैनेजमेंट, समाजशास्त्र, गणित, ड्राइंग एंड पेंटिग, विधि, इतिहास, अंग्रेजी, फिजिकल एजुकेशन, कंप्यूटर साइंस, लाइब्रेरी एंड इनफार्मेशन साइंस, माइक्रोबायोलाजी, भूगोल, बायोटेक्नोलाजी, स्किल, सांख्यिकी, संगीत, मनोविज्ञान आदि के ई कंटेंट अपलोड किए गए हैं।

ब्रिज लाइब्रेरी पर 982 ई कंटेंट

सीसीएसयू की वेबसाइट पर ब्रिज लाइब्रेरी पोर्टल पर भी ई कंटेंट अपलोड किए गए हैं। इसमें करीब 982 ई कंटेंट हैं। छात्र-छात्राएं यहां से भी अपने विषय की पढ़ाई कर सकते हैं।

छात्र-छात्राएं डिजिटल लाइब्रेरी के पोर्टल के अलावा विश्वविद्यालय के ब्रिज लाइब्रेरी पोर्टल पर जाकर अपने विषय से संबंधित ई कंटेंट देख सकते हैं। सभी कंटेंट सिलेबस को ध्यान में रखकर ही तैयार किए गए हैं, जो छात्रों के लिए उपयोगी है।

- डा. जमाल अहमद सिद्दकी, पुस्तकालय अध्यक्ष, सीसीएसयू

''मेरी पहचान हिंदी है, हिंदी में काम करती हूं, इसलिये सब मुझे ब्रिटेन में जानते हैं''

विश्व हिंदी दिवस पर सीसीएसयू के हिंदी विभाग में वेब गोष्ठी और भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

परिसर संवाददाता

मेरठ। दस जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के मौके पर चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में एक वेब गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें देश के अलावा विदेश से भी हिंदी साहित्यकार और कहानीकार उपस्थित रहे। गोष्ठी में पता चला कि विदेशों में धाक जमा रही हिंदी ने भारतीयों की वहां पर एक नई पहचान बनाई है।

वेब गोष्ठी का विषय 'विदेशों में हिंदी लेखन' था। इसकी अध्यक्षता प्रति कुलपति प्रोफेसर वाई. विमला ने की। उन्होंने कहा कि हिंदी विश्व पटल पर अपनी पहचान बना रही है। तकनीक और रोजगार, दोनों ही क्षेत्रों में हिंदी ने विकास किया है। हिंदी साहित्य सेवी और प्रेमी हिंदी को विकास के नए सोपान तक पहुंचाएंगे और हिंदी की एक अक्षुण्ण परम्परा को बनाएंगे।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता तेजेन्द्र शर्मा ने कहा कि भारत के बाहर हिंदी लेखन तीन स्तरों पर हो रहा है, गिरमिटिया, विदेशी और अपने कैरियर के लिए विदेश जाने वाले छत्प् हिंदी में लेखन कर रहे है। छंद से मुक्ति होने के करण कविता लेखन की सबसे लोकप्रिय विधा है।

उन्होंने बताया कि ब्रिटेन में पहला कहानी संग्रह उषा राजे सक्सेना ने 'मिट्टी की सुगंध' नाम से प्रकाशित किया, जिसमें ब्रिटेन के प्रमुख कहानीकारों को शामिल किया गया। तेजेंद्र शर्मा ने कहा कि हाल

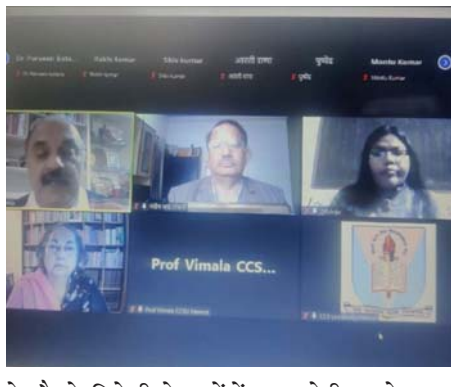

के दौर के विदेशी लेखकों में सुषमा बेदी सबसे पहली लेखिका मानी जाएंगी। साहित्य में निरंतरता और सृजनात्मकता दोनों जरूरी हैं। अपनी जड़ों को लेकर प्रवासी लेखक की मूल संवेदना है। लेखकों ने विदेशी संवेदनाओं को साहित्य का विषय बनाया, जिससे हिंदी सहित्य में हम कुछ नया दे सके।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में हिंदुस्तानी लोग डॉक्टर, वकील, व्यवसायी के रूप में काम कर रहे हैं। भारत के बाहर लिखे जाने वाले साहित्य को पढ़ने की आवश्यकता है। विदेशों में लिखे जा रहे साहित्य को दोयम दर्जे का साहित्य न माना जाय। विदेशी जीवन को जानना है तो विदेशी लेखकों के नए साहित्य को पढ़ना चाहिए। हमारे अनुभव विदेशी है, भाषा हिंदी है, जहाँ जीवन है, वहां कहानी है, प्रवासी लेखन की सृजन सामग्री भारत में निहित है, और हम भारतीयता को अपने विदेशी अनुभवों में प्रस्तुत करते रहेंगे।

कार्यक्रम में जया वर्मा ने कहा कि इंग्लैंड में सन 1950 से हिंदी लेखन हो रहा है,लेकिन प्रवासी साहित्य का प्रकाशन सन 2000 से आरंभ हुआ और आज विपुल मात्रा में प्रवासी साहित्य मौजूद है और लिखा जा रहा है। विदेशों में हिंदी लेखन से हिंदी की व्यापकता बढ़ी है, और भारतीय भाषाओं की पहचान विश्व पटल पर स्थापित हुई है। मेरी पहचान आज हिंदी है, हिंदी में काम करती हूं, इसलिये सब मुझे ब्रिटेन में जानते हैं और इसका मुझे गर्व है। उन्होंने कहा कि भारतीय लोग भी हिंदी को स्वाभिमान से जोड़ें, तभी हिंदी आगे बढ़ेगी। सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद में हिंदी में रोजगार की अपार से संभावनाएं हैं।

कार्यक्रम संयोजन हिंदी विभागाध्यक्ष और कला संकाय के अध्यक्ष प्रोफेसर नवीन चंद्र लोहनी ने किया।

प्रथम सत्र में 'हिंदी की वैश्विकता और वर्तमान स्थिति' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें विभाग के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी की। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल में विभाग के शिक्षक डॉ अंजू, डॉ. प्रवीण कटारिया और डॉ. आरती राणा थीं। प्रथम सत्र का संचालन डॉ. विद्यासागर सिंह और दूसरे सत्र का संचालन डॉ. अंजू ने किया। इस दौरान जया देवी, निकुंज कुमार, अंकिता तिवारी, पुष्पेंद्र कुमार, अंजलि पाल आदि ने पुरस्कार जीते।

विश्व के विश्वविद्यालयों में बढ़ रहा हिंदी का दबदबा

मेरठ। चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के कला संकाय अध्यक्ष और हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर नवीन चंद लोहनी कुछ वर्ष पहले चीन के विश्वविद्यालय में पढ़ाने गए थे। प्रोफेसर लोहनी के अनुसार चीन के 15 विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा के तौर पर पढ़ाई जा रही है। चीन के युवा हिंदी सीखकर भारतीय संस्कृति को गहराई से जानना चाहते हैं। साथ ही उन्हें हिंदी में बाजार और रोजगार भी दिख रहा है। इसके अलावा हंगरी, अफ्रीका और अरब के कई देशों में हिंदी को उनके विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। चीन में हिंदी-चीनी और अंग्रेजी में शब्दकोष भी तैयार किया गया है। इसी तरह से जर्मनी, जापान और रूस में हिंदी के साथ मिलकर शब्दकोष तैयार किया गया है। प्रोफेसर लोहनी का मानना है कि तकनीकी विस्तार से हिंदी को भी विस्तार मिला है। यूनीकोड और बोलकर लिखने की तकनीकी से देवनागरी लिपि में हिंदी लिखने और पढ़ने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ी है। विदेश में रहने वाले प्रवासी भारतीय इस तकनीकी का पूरा इस्तेमाल कर रहे हैं।

मुख्य संरक्षक- प्रोफेसर संगीता शुक्ला (कुलपति), संरक्षक- प्रो. वाई. विमला (प्रति कुलपति), मुख्य संपादक- प्रो. प्रशांत कुमार, संपादक- डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, संपादकीय सहयोगी- लव कुमार सिंह, मितेंद्र कुमार गुप्ता।

विवि कैंपस में खुलेगा मानव संसाधन विकास केंद्र

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने एकेडमिक काउंसिल की बैठक में केंद्र पर लगाई मुहर

परिसर संवाददाता

मेरठ। भविष्य की जरुरतों के अनुरूप छात्रों की प्रतिभा को निखारने के लिए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय कैंपस में मानव संसाधन विकास केंद्र खुलेगा। कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला की अध्यक्षता में शुक्रवार 21 जनवरू को हुई विद्वत परिषद की बैठक में विवि ने यूजीसी को इस प्रकार का प्रस्ताव भेजने पर मुहर लगा दी। केंद्र स्थापित होने के बाद परिसर में छात्र प्रशिक्षित किए जा सकेंगे।

विश्वविद्यालय ने संस्कृत में माइनर कोर्स के रूप में भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत कोर्स शुरू करने को भी हरी झंडी दे दी है। इस कोर्स को दूसरे फेकल्टी के छात्र भी पढ़ सकेंगे। विवि इंडस्ट्री एकेडमी इंटरफेस के तहत एनसीआर की प्रमुख इंडस्ट्री से एमओयू भी साइन करेगा। इस दौरान विद्वत परिषद में प्रोवीसी प्रो. वाई विमला, रजिस्ट्रार धीरेंद्र कुमार, प्रो. वीरपाल, प्रो.एनसी लोहनी, प्रो.एसएस गौरव, प्रो.दिनेश कुमार, प्रो.विकास शर्मा, प्रो.मृदुल गुप्ता, प्रो.स्नेहलता और प्रो.बिंदु शर्मा सहित सभी एचओडी मौजूद रहे।

पोस्ट हार्वेस्ट मैनेजमेंट के कोर्स भी शुरू

कुलपति प्रो.शुक्ला ने उत्तर प्रदेश कृषि निर्यात नीति-2019 एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नियमों के अनुसार कैंपस स्थित जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग विभाग में सत्र 2022-23 से पोस्ट हार्वेस्ट मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी में दो वर्षीय डिग्री एवं एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू करने पर भी मुहर लगा दी। दोनों कोर्स में 30-33 सीटों पर प्रवेश हो सकेंगे।

फिजिक्स में शुरू होंगे तीन विशेषीकृत कोर्स

कैंपस स्थित फिजिक्स विभाग में

प्रो0 संगीता शुक्ला

एमएससी स्पेशलाइजेशन इन ऑप्टो-इलेक्ट्रानिक्स, एमएससी स्पेशलाइजेशन इन नैनो साइंस एंड नैनो टेक्नोलॉजी और एमएससी स्पेशलाइजेशन इन एप्लाइड सॉलिड स्टेट फिजिक्स सहित कुल तीन नए कोर्स शुरू होंगे। इनमें भी प्रवेश सत्र 22-23 से शुरू होंगे।

दो दशक की मांग पूरी, शुरू होगा एमटेक

सर छोटूराम इंजीनियरिंग कॉलेज में करीब दो दशक की मांग शुक्रवार को पूरी हो गई। विवि ने कॉलेज में एमटेक कोर्स शुरू करने पर मुहर लगा दी। कॉलेज में कम्प्यूटर साइंस और इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग ब्रांच में एमटेक में प्रवेश हो सकेंगे। दोनों कोर्स में 18-18 सीटें रहेंगी। विवि ने एमसीए कोर्स को साइंस स्ट्रीम में कर दिया है।

छात्रों को पांच हजार रुपये रिसर्च फैलोशिप

विवि ने रिसर्च फैलोशिप को बढ़ाकर ढाई हजार रुपये से पांच हजार रुपये महीना कर दिया है। गुणवत्तायुक्त शोध को बढ़ावा देने के लिए विवि ने यह निर्णय लिया है।

म्यूचुअल फंड, शेयर मार्केट के कोर्स

राजकीय कॉलेज देवबंद में विवि ने म्यूचल फंड, शेयर मार्केट, ई-रिटर्न एवं टेक्सटाइल मैनेजमेंट के कोर्स पर मुहर लगा दी है। कॉलेज में ये छह नए कोर्स एनईपी के तहत कौशल विकास हेतु चलेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को आगे बढ़ांगी छह सेल

विवि ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत छह सेल का गठन किया है। इसके तहत रिसर्च एंड इनोवेशन, आईटी पॉलिसी, इन्वॉयमेंटल पॉलिसी, मोरल एंड इथिक्स पॉलिसी, इन्क्यूबेशन सेंटर और सेंटर फॉर वोकेशनल एजुकेशन एंड स्किल डवलपमेंट सेल बनाई गई हैं। इन सेल के प्रभारी क्रमशः प्रो.वीर पाल सिंह, प्रो. मुकेश शर्मा, प्रो.एके चौबे, प्रो.पवन कुमार शर्मा, प्रो.हरे कृष्णा एवं प्रो.वाई सिंह होंगे।

सीसीएसयू के अंतर्गत ही रहेगा एलएलआरएम मेडिकल कालेज

परिसर संवाददाता

मेरठ। प्रदेश सरकार ने सभी मेडिकल व पैरामेडिकल कालेजों को अटल बिहारी वाजपेयी चिकित्सा विश्वविद्यालय से संबद्ध करने का निर्णय लिया है, लेकिन शनिवार को हुई चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की कार्य परिषद की बैठक में यह निर्णय लिया गया है कि लाला लाजपत राय मेडिकल कालेज मेरठ को स्थानांतरित नहीं किया जाएगा। इसका संचालन सीसीएसयू के अंतर्गत ही जारी रहेगा।

दरअसल, अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय ने सीसीएसयू को पत्र भेजा था कि यदि विवि अपने अधीन संचालित मेडिकल कालेज को स्थानातरित नहीं करना चाहता है तो वह अनापत्ति प्रमाणपत्र ले सकते हैं। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला की अध्यक्षता में हुई कार्य परिषद की बैठक में निर्णय हुआ है

कि एलएलआरएम मेडिकल कालेज को विवि के अंतर्गत ही संचालित करने के लिए अनापत्ति प्रमाणपत्र के लिए आवेदन व शासन को पत्र भेजा जाएगा।

इसके अलावा कार्य परिषद की बैठक में हुए अन्य निर्णयों में विद्वत परिषद की 21 जनवरी की बैठक, परीक्षा समिति की पांच जनवरी की बैठक और वित्त समिति की 20 जनवरी की बैठकों के कार्यवृत्ति की संपुष्टि भी परिषद ने कर दी है। सेंट्रल इंस्ट्रूमेंटेशन फेसिलिटी केंद्र का नाम प्रो. वी. पुरी के नाम पर करने का निर्णय लिया गया है। 10 शोध छात्रों को शोध उपाधि प्रदान की जाएगी। सीसीएसयू के बाहर हुए अतिक्रमण को हटाने के लिए भी विवि की ओर से शासन व जिला प्रशासन को पत्र लिखा जाएगा। कुलपति की ओर से प्रो. वाई विमला को प्रति कुलपति नियुक्त किए जाने को भी कार्य परिषद ने स्वीकृति प्रदान की है। डा. राजीव सिजेरिया की नियुक्ति जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पद पर हो गई है। विवि कार्य परिषद ने उनका त्यागपत्र स्वीकार कर लिया है। आइटीएस इंस्टीट्यूट आफ हेल्थ एंड एलाइड साइंसेज ग्रेटर नोएडा की ओर से संचालित बीएससी बायोटेक्नोलाजी एवं एमएससी बायोटेक्नोलाजी पाठ्यक्रम की संबद्धता समाप्त करने का आवेदन स्वीकार कर लिया गया है। कार्य परिषद की बैठक में कुलसचिव धीरेंद्र वर्मा, वित्त अधिकारी सुशील कुमार गुप्ता, परीक्षा नियंत्रक डा. अश्वनी शर्मा सहित कार्य परिषद के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

अंतर विश्वविद्यालय एथलेटिक्स में CCSU ने पहली बार रजत जीता

परिसर संवाददाता

मेरठ। कर्नाटक में जनवरी के प्रथम सप्ताह में आयोजित अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की टीम ने रजत पदक प्राप्त किया। शारीरिक शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रोफेसर जीएस रूहल ने बताया कि अंतर विश्वविद्यालय एथलेटिक्स में सीसीएसयू के नाम यह अभी तक का पहला पदक है।

मिली जानकारी के अनुसार विश्वविद्यालय की टीम ने 81वीं अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में रिकॉर्ड बनाते हुए 4 गुणा 400 मीटर रिले दौड़ में यह उपलब्धि हासिल की। टीम में तीन खिलाड़ी सचिन, नीतिन व विनीत मेरठ कॉलेज के छात्र हैं। सीसीएसयू टीम ने 3:13:08 मिनट के समय के साथ दूसरे स्थान पर रहते हुए रजत पदक अपने नाम किया, जबकि 3:11:91 मिनट के साथ कर्नाटक की मैंगलोर विवि टीम ने स्वर्ण पदक और 3:13:44 मिनट के साथ महात्मा गांधी विवि की टीम ने कांस्य पदक अपने नाम किया। प्रतियोगिता में देश के 42 विवि की टीमों ने प्रतिभाग किया था।

उद्योगों की जरूरत के हिसाब से तैयार किये जाएंगे विद्यार्थी

उद्योगों के साथ सहयोग समझौते किए जाएंगे, पाठ्यक्रमों में जरूरत के अनुसार संशोधन होंगे

परिसर संवाददाता

मेरठ। तकनीकी ज्ञान में दक्षता आज के युवाओं की सफलता की गारंटी है। इंडस्ट्री की आवश्यकताओं को पूरा करने में विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विश्वविद्यालय तकनीकी संवर्धन, नवाचार एवं मानव संसाधन विकास का प्रमुख केंद्र होते हैं। चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ इस ओर प्रयास कर रहा है तथा आवश्यकतानुसार ऐसे महत्वपूर्ण उपक्रमों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध भी है। यह विचार चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की कुलपति प्रो॰ संगीता शुक्ला ने सृजन संचार और यूपीआईडी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'एडवांटेज गाजियाबाद' नामक वेबिनार में व्यक्त किये। इसका आयोजन 11 जनवरी को किया गया।

उन्होंने कहा कि चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण आधारभूत ढांचा और आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित लैब में ट्रेनिंग कराते हुए उनके लिए इंडस्ट्री में पर्याप्त अवसर उपलब्ध करा रहा है। हम इस क्षेत्र में अपने विश्वविद्यालय के संयोजन से और प्रगति कर सकते हैं। आवश्यकतानुसार ऐसी इंडस्ट्रियों से एमओयू भी शीघ्र ही किये जाएंगे। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रमों में भी आवश्यक संशोधन करते हुए उन्हें अद्यतन किया जाएगा। विश्वविद्यालय के शिक्षक और इंडस्ट्री के विशेषज्ञों का भी आदान-प्रदान किया जाएगा।

प्रोफेसर शुक्ला ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्रों में संचालित विश्वविद्यालय से संबद्ध कॉलेजों में चल रहे पाठ्यक्रमों पर विशेष बल दिया जाएगा तथा ऐसे पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को विशेष रूप से इंडस्ट्री के हिसाब से तैयार किया जायेगा। विश्वविद्यालय का यह प्रयास रहेगा कि कि इस प्रकार के एमओयू से अकादिमक और इंडस्ट्री के बीच समन्वय स्थापित हो सके। इससे न केवल विद्यार्थियों को रोजगार के नए अवसर प्रदान होंगे बल्कि उद्यमिता को भी बढ़ावा मिलेगा जिससे देश के विकास में भी वे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की प्रतिकुलपति प्रोफेसर वाई. विमला ने कहा कि हमें अपने विद्यार्थियों को तकनीकी एवं कौशल की दृष्टि से दक्ष करने के लिए इंडस्ट्री की सहायता की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक तौर पर गाजियाबाद और नोएडा के दो बड़े कॉलेजों को इंडस्ट्री की आवश्यकताओं के अनुरूप विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए केंद्र बनाया जाएगा। इन केंद्रों पर 50 से 100 विद्यार्थी ट्रेनिंग लेंगे। इस वेबिनार में एकेटीयू के कुलपति प्रो॰ विनीत कंसल के अतिरिक्त नीरज सिंघल, शैलेन्द्र जायसवाल, साकेत अग्रवाल, रचना मुखर्जी, राज शेखर आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

- बृहस्पति भवन में 4 जनवरी को हुए सिनेमैटोग्राफी कार्यशाला के उद्घाटन कार्यक्रम में परिसर समाचार पत्र का विमोचन करते हुए कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला, कार्यक्रम के मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार अशोक श्रीवास्तव, कला संकाय के अध्यक्ष प्रोफेसर नवीन चंद्र लोहनी, तिलक पत्रकारिता और जनसंचार स्कूल के निदेशक डॉ. प्रशांत कुमार, डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव और लवकुमार सिंह।

सिनेमैटोग्राफी कार्यशाला में छात्रों ने सीखे फिल्म निर्माण के गुर

तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल ने किया सात दिन का महत्वपूर्ण आयोजन

परिसर संवाददाता

मेरठ। "मेहनत का कोई विकल्प नहीं है। मेहनत और प्रतिभा के बल पर ही आप अपनी लाइन में बने रह सकते हैं। वर्तमान में जितने भी सफल लोग हैं, चाहे वह फिल्म लाइन में हो या या फिर किसी अन्य लाइन में, सभी अपनी मेहनत के बल पर ही अपना स्थान बनाए हुए हैं। अपने आप को हमें समय के हिसाब से बदलने के लिए भी तैयार रहना होगा। नहीं तो भविष्य में चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।" यह बात चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल द्वारा बृहस्पति भवन में आयोजित सात दिवसीय सिनेमैटोग्राफी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता डीडी न्यूज के सलाहकार संपादक अशोक श्रीवास्तव ने कही। 10 जनवरी तक चली इस कार्यशाला की शुभारंभ चार जनवरी को हुआ।

परिस्थितियों के अनुसार स्वयं में बदलाव लाएं द्ध अशोक श्रीवास्तव

अशोक श्रीवास्तव ने कहा कि फिल्म रचनात्मकता का बहुत बड़ा माध्यम है। वर्तमान में इस माध्यम में युवाओं के पास बहुत अवसर हैं। इसी के साथ अब कहानियों की भी कमी नहीं है। हर गली-मोहल्ले और गांव में कहानी मिल जाएगी। उन्होंने कहा कि युवा अपनी प्रतिभा को पहचानें और फिर उसके अनुसार काम करें। वर्तमान समय में टीवी के सामने मोबाइल फोन बड़ी चुनौती बन गया है। इसीलिए अपने अंदर बदलाव लाना होगा। पत्रकारिता में पढ़ने से ज्यादा सीखने की जरूरत है। हमें स्थितियों के हिसाब से स्वयं को ढालना होगा।

नोएडा का फिल्मसिटी युवाओं को देगा नए अवसर - तरुण राठी

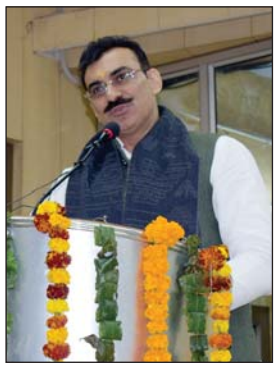

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और उत्तर प्रदेश फिल्म विकास परिषद के उपाध्यक्ष तरुण राठी ने कहा कि नोएडा में विश्व स्तरीय सुविधाओं वाला फिल्मसिटी बन रहा है। यह इस क्षेत्र के युवाओं के लिए एक बड़े अवसर के रूप में होगा। इससे यहां पढ़ रहे युवाओं को सीधा लाभ होगा। उन्होंने कहा कि यदि आपको कोई काम दिया गया है तो सौ रुपये के काम के लिए हजार रुपये का काम करके दिखाएं। ऐसा करने पर आपको सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने कहा कि मुंबई हो या फिर कहीं और, जो भी कलाकार हैं, वे हमारे और आपके जैसे ही हैं। उन्होंने कहा कि एक अच्छी फिल्म में अच्छी स्क्रिप्ट और मनोरंजन होना चाहिए।

जितना पढ़ेंगे, उतनी तरक्की करेंगे द्ध प्रोफेसर संगीता शुक्ला

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं चैधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा कि आपके अंदर सीखने की जिज्ञासा होनी चाहिए। उन्होंने छात्रों से कहा आप रोज एक अखबार के एक या दो कॉलम को पढ़िए और फिर अपने शब्दों में उसका नोट्स तैयार करने की आदत बनाएं। इससे आप अपने अंदर एक बदलाव देखेंगे। आपकी कलम में ताकत है। लिखने से आपका कौशल बढ़ेगा और जितना आप पढ़ेंगे, आप उतनी ही तरक्की करेंगे।

प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा कि अपनी कलम के माध्यम से समाज के लिये कार्य करें, पत्रकारिता विभाग किसी भी विश्वविद्याल, संस्थान और समाज के लिए महत्वपूर्ण है। यदि विभाग का नाम होगा तो विश्वविद्यालय का भी नाम होगा।

कला संकाय के डीन प्रोफेसर नवीन चंद्र लोहनी ने भी विचार व्यक्त किये। तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के निदेशक प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने सभी का स्वागत किया। डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन बीनम यादव ने किया।

इस दौरान प्रति कुलपति प्रोफेसर वाई विमला, प्रोफेसर एसएस गौरव, प्रोफेसर बिंदु शर्मा, प्रोफेसर रूप नारायण, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. प्रदीप कुमार, लव कुमार, मितेंद्र कुमार गुप्ता, रेडियो जॉकी नेहा कक्कड़, तुमुल कक्कड़ आदि भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में राकेश कुमार, उपेश दीक्षित, ज्योति राठौर, नाजर, राजीव और विभाग के छात्र-छात्राओं का विशेष सहयोग रहा।

उद्घाटन सत्र के बाद छात्र-छात्राओं को सात दिन तक अभिनय, सिनेमैटोग्राफी और फिल्म निर्माण की बाराकियों का गहन प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण की जिम्मेदारी श्री नरेंद्र और विशेषज्ञ फिल्मकार विलय शंकर ने निभाई। इस दौरान छात्र-छात्राओं के समूह बनाकर उनसे अनेक लघु फिल्में भी बनवाई गईं।

करीब 60 प्रतिभागियों ने अलग-अलग समूहों में 18 लघु फिल्में बनाईं। कार्यशाला के समापन पर भागीदारी करने वाले छात्र-छात्राओं के प्रमाणपत्र वितरित किये गए। विभाग के निदेशक डॉ. प्रशांत कुमार ने फिल्म मेकर विलय शंकर को पादप और शॉल भेंट किया। डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।